P. C. Satapathy

:-केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम:-

प्रतिक्रिया

पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण अंग है शिक्षा का क्योंकि सम्पूर्ण

शिक्षा-व्यवस्था इस पर आधारित है और सभी महाविद्यालय इस का अनुशासन पूर्वक अनुसरण करतें है और इसका

समय-समय पर नियमानुसार परिवर्तन भी होता है और होना

भी चाहिए । यह पाठ्यक्रम विश्व विद्यालय द्वारा निर्धारित किया

जाता है । यह कार्य सरल तो नहीं है बहुत सोच समझकर विषय

से संबंधित पुस्तकों का चयन करना होता है।

(1) उक्त विश्वविद्यालय द्वारा लगाए गए पाठ्यक्रम बहुत ही सुन्दर ,सरल और रुचिकर है।

(2) ऐसे पाठ्यक्रम से छात्रों का भविष्य उज्जवल एवं सुरक्षित है।

(3) इस तरह पाठ्यक्रम के द्वारा निर्धारित पुस्तक को पढ़कर छात्र और छात्राएं अवश्य लाभान्वित होंगे।

(4) हर क्षेत्र में छात्र-छात्राएं अवश्य अपना ज्ञान वितरण करनें में यथा संभव सक्षम होंगे।

(5) इस तरह पाठ्यक्रम को पढ़कर छात्र और शिक्षक दोनों ही सन्तुष्ट हैं।

(6) इस पाठ्यक्रम से छात्र एवं अध्यापक दोनों के ज्ञान का सर्वांगीण विकास होगा।

(7) यह जो पाठ्यक्रम है नई शिक्षा नीति आधार पर बनाया गया है ।

(8) इस पाठ्यक्रम से धर्मगुरु इत्यादि में भर्ती होने केलिए। सुगमता रहेंगी।

(9) आगे भविष्य में यदि छात्र NET-PH.D की तैयारी करता है यह पाठ्यक्रम बहुत सहायक सिद्ध होगा।

Created with Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF

(10) पाठ्यक्रम से संबंधित कोई ऐसी समस्या **अब तक** नहीं आई है आशा है कि भविष्य में भी नहीं आयेगी।

धन्यवाद

डॉ प्रकाश चन्द्र शतपथी (वेद-विभाग)
श्रीमती लाड देवी **शर्मा पंचोली** आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
बरुन्दनी, भीलवाड़ा, राजस्थान

Created with Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF

B. M. Sharma

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम संबंधित प्र प्रतिक्रिया

शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम का अत्यधिक महत्व है बिना पाठ्यक्रम के शिक्षा का क्षेत्र अधूरा रहेगा

समयचक्र पाठ्यक्रम की उपयोगिता सिद्ध के लिए निश्चित पाठ्यपुस्तक होने से छात्र व अध्यापक पुनःअनुसंधान करते हैं।

विषयावर पाठ्यपुस्तकों का चयन किया गया किया हो सरल भाषा में छात्रों को बोध कराना पाठ्यग्रन्थ के कुछ अंशों का ग्रहण कर सुंदर सरल पाठ्यक्रम के द्वारा भाषा बोध एवं जीवन उपयोगी जीवकोपार्जन का ध्यान आकर्षित किया है

राष्ट्रीय स्तर पर छात्रों को तैयार करने हेतु पाठ्यक्रम तदनुसार हो जिससे छात्रा लाभान्वित हो रहे हैं

आधुनिक परिपेक्ष में शिक्षा पद्धति एवं पाठ्यक्रम में बदलाव समय समय पर हुआ है

भारत के शिक्षा मिशन में सम्मिलित होने के उद्देश्य से शिक्षा का विकास के अनुरूप है

पाठ्यक्रम से संबंधित कोई समस्या नहीं आई है छात्रों को कोई कठिनाई नहीं आई है

पाठ्यक्रम नेट परीक्षा में सहायक है यूजीसी परीक्षा के लिए यूपीएससी परीक्षा के लिए तैयारी अध्ययन के साथ-साथ हो जाती है

डॉ. ब्रजमोहन शर्मा श्रीमतीलाड़देवीशर्मापंचोली आदर्शसंस्कृतमहाविद्यालय बरूनदनी, जिला भीलवाड़ा राजस्थान

Created with Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF

J. K. Dubey

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा पाठ्यक्रम -

।। प्रतिकृया ।।

किसी भी शैक्षणिक संस्था को चलाने के लिए पाठ्यक्रम की आवश्यक होती है क्यों कि पाठ्यक्रम के आधार पर ही एक शिक्षक अपना पठन-पाठन का कार्य सम्पन्न करवाता है । दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम शिक्षा का एक वह आधार है जिस पर चलकर शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है।

यह पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के द्वारा निर्धारित किया गया है यह बहुत ही उतम है। क्यों कि इसको पढ़ने वाले छात्रों की संख्या में उत्तरोतर क्रम से वृद्धि हो रही है । इसका कारण इसकी सहजता है। जो भी पुस्तकें हैं वह बहुत उतम चयन किया गया है जिससे छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी।

1- उपरोक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम बहुत ही ज्ञानवर्धक है।

2- इस प्रकार का पाठ्यक्रम का होना छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए अच्छा हैं क्यों कि यह रूचिकर है।
3- इससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है।

4- सभी क्षेत्रों में इस पाठ्यक्रम को पढ़कर छात्रों का ज्ञानवर्धन होगा।

5- सबसे अच्छी बात यह है कि इस पाठ्यक्रम में अभी तक कोई समस्या नहीं आयी है तथा सभी छात्र मनोयोग से इसका अध्ययन कर रहें हैं।

नमो नमः 🙏

डॉ. जितेन्द्र कुमार दुबे
(सहायक आचार्य ज्योतिष)
श्रीमतीलाडदेवीशर्मापंचोलीआदर्शसंस्कृत
महाविद्यालय बरून्दनी भीलवाड़ा
राजस्थान पिन:- 311604

Created with
Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF

S.K. Tiwari

Feedback

1. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दी साहित्य के पाठ्यक्रम का निर्धारण अत्यंत सराहनीय है। सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य का क्रमिक विकास अर्थात् ऐतिहासिक अध्ययन के पश्चात उस विशेष कालखंड के कवियों एवं रचनाओं का अध्ययन -अध्यापन सुबोध होने के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक भी है ।

2. प्रत्येक कवि और उनकी रचनाओं का अध्ययन अध्यापन सुरुचिपूर्ण है; क्योंकि प्रत्येक कवि की काव्यगत एवं प्रवृतिगत एक-एक विशेषताओं की व्यंजना करने वाले पदों को ही व्याख्या खंड में रखा गया है । जिससे कवि की विशेषताओं को समझने मे विद्यार्थी को कठिनाई नहीं होती। आचार्य गण को भी पदों की व्याख्या प्रस्तुत करने के साथ कवि की कालगत ,भाषागत, काव्यगत एवं भावगत विशेषताओं के लिए पाठ्यपुस्तक से ही प्रमाण प्राप्त हो जाते हैं ; जैसे- कबीर निर्गुण कवि थे , किंतु निर्गुण बिना सगुण के असिद्ध रह जाता है । इस दृष्टि से कबीर के पद द्रष्टव्य हैं-

दुल्हिन गावहुं मंगलाचार

मोरे घर आयहुं राजा राम भरतार ।

3. शास्त्री स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं । उनमें परिपक्वता का अभाव होता है । अतः शास्त्रीय स्तर पर अत्यधिक शृंगारिक या मांसल श्रृंगारपरक पद प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं । बालक - बालिकाओं की सहकक्षा में अध्यापक को भी व्याख्या करने में किंचित कठिनाई आती है; जैसे- मलिक मोहम्मद जायसी कृत 'पद्मावत' के श्रृंगार वर्णन में।

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय ने इस मनोभाव को समझते हुए पद्मावत के वियोग वर्णन को पाठ्यक्रम में रखकर अपनी सुविज्ञता का परिचय दिया है । जिससे जायसी 'प्रेम की पीर' के कवि थे, सिद्ध करने के लिए प्राध्यापक को तर्क पुष्ट प्रमाण मिल जाता है और छात्रों को भी सुविधा होती है।

4.पाठ्यक्रम प्रतियोगी परीक्षाओं के उपयुक्त है ।प्राय: सभी क्षेत्रों में, सभी स्तर के विभागों में, प्रशासकीय सेवाओं में, अध्यापक-पात्रता परीक्षाओं में जो प्रश्न महत्वपूर्ण हैं; उनकी अनुरुपता में पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है।

5.पाठ्यक्रम क्रमागत रुप से प्रयोजनपरक एवं युग-सापेक्ष हो, इसका प्रयत्न भी

दृष्टिगत होता है;जो कालान्तर में अर्थ प्रदायी सिंद्ध होगा ।

सुझाव

हिन्दी भाषा एवं साहित्य छात्रों के लिए तभी आकर्षक सिद्ध होगा जब पाठ्यक्रम में प्रयोजनपरक हिन्दी के साथ भाषा-तकनीक को भी समायोजित किया जाय । जिससे हिन्दी को राजभाषा के रुप में प्रतिष्ठित करने में सहूलियत हो।

21/06/024

डॉ संजय कुमार तिवारी

सहायक आचार्य: हिंदी

श्रीमती लाड देवी शर्मा पंचोली आदर्श संस्कृत महाविद्यालय बरुन्दनी , भीलवाड़ा , राजस्थान 311604

Created with Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF

N. K. Chandhury

टीचर फीडबैक

शिक्षा जगत में किसी भी शैक्षणिक संस्थानों का एक सशक्त आधार उसका पाठ्यक्रम होता है।जिसकी संरचना विश्वविद्यालय के प्रबुद्ध समिति करती है।वह समिति अपने राष्ट्र की मूल भावना व संस्कृति को संरक्षित करती हुई अपने राष्ट्र की आवश्यकता अनुसार समय समय पर पाठ्यक्रम की समीक्षा भी करती है और उसमें आवश्यक संशोधन भी करती रहती है।ताकि पाठ्यक्रम छात्र व छात्राओं एवं अध्यापकों के लिए अरुचिकर एवं समयानुकूल न हो। हमारे केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली द्वारा नूतन पाठ्यक्रम का निर्धारण भी अत्यन्त समयोपयोगी है।

1.सर्वप्रथम छात्र व छात्राओं के लिए अत्यन्त उपयोगी व कल्याणकारी है।

2.पाठ्यक्रम अत्यंत सरल रुचिकर एवं भविष्योन्मुखी है।

3.भविष्य में छात्र व छात्राओं को जीविकोपार्जन में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

4.NET,IAS,IPS,आदि देश के महत्वपूर्ण परीक्षाओं की तैयारी करने में छात्र व छात्राओं को बहुत सहायक होगा।

5.छात्र व छात्राओं का हृदय कूट-कूट कर राष्ट्रीय भावना से भर जाएगा ।

6.छात्र व छात्राओं को अपनी देश की समृद्ध संस्कृति के विषय में जानकारी प्राप्त कर उनके भाल गर्वोन्नत हो जाएंगे।

डा नवल किशोर चौधरी
सहायक आचार्य (न्याय दर्शन)
मो.7982331045

Created with Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF

Umesh Shukla

FEEDBACK

कुलपति की जी के द्वारा जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है वह छात्रों के भविष्य को देखते हुए निर्धारित किया गया है ।

छात्रों का सर्वांगीण विकास कैसे हो इसके हित को देखते हुए यह पाठ्यक्रम निर्धारण किया गया है पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसको छात्र परंपरा के साथ आधुनिक विषय का भी ज्ञान हो अभी तक केवल हम परंपरागत विषयों को पढ़ते थे और आधुनिक विषयों के बारे में यदि कोई पूछता था तो लोगों को कुछ आता जाता नहीं था

व्याकरण का जो पाठ्यक्रम निर्धारण किया गया है वह अत्यंत सरल और मार्मिक है व्याकरण सभी शास्त्रों का प्रमुख शास्त्र माना गया है व्याकरण का ज्ञान तो सबको होना चाहिए

व्याकरण के साथ-साथ ज्योति कर्मकांड साहित्य आदि विषयों का भी ज्ञान होना चाहिये जो इस पाठ्यक्रम में सब कुछ रखा गया है जो अत्यंत प्रशंसनीय है

डॉ उमेश शुक्ला

असिस्टेंट प्रोफेसर व्याकरण विभाग श्रीमती लाड देवी शर्मा पंचोली आदर्श संस्कृत महाविद्यालय वरुन्दनी राजस्थान

Created with Nebula Office PDF
www.NebulaOffice/PDF